Date - 15/07/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. - II (Hons.)

Topic - Locke : Simple and complex ideas.

Scanned with CamScanner

लॉक के अनुसार सरल प्रत्ययों और जटिल प्रत्ययों में भेद।

लॉक अनुभववाद के पिता माने जाते हैं क्योंकि लॉक ही वैसे पहले दार्शनिक हैं जो 'बुद्धिवादी' की मान्यताओं का निषेध कर, एक नये सिद्धांत अनुभववाद की स्थापना किए।

लॉक ने जन्मजात प्रत्यय का खंडन किया है तथा अनुभववाद को माना है। लॉक ने कहा है कि हमारे समस्त ज्ञान का स्रोत अनुभव है। ये अनुभव हमें प्रत्ययों के रूप में प्राप्त होते हैं। प्रत्यय से लॉक का अभिप्राय है कि हमारा मन प्रत्यय रूप से ग्रहण करता है। प्रत्यय भौतिक वस्तुओं और मन से भिन्न है। प्रत्यय मन में भौतिक वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारा मन प्रत्ययों के द्वारा ही भौतिक वस्तुओं को जानता है।

लॉक ने ज्ञान के दो साधनों को माना है - संवेदना तथा स्वसंवेदना। इन दोनों के दरवाजे एक साथ नहीं खुलते। है संवेदना का द्वार पहले खुलता है और स्वसंवेदना का उसके बाद में। संवेदना से हमें वस्तु का ज्ञान होता है, इनके द्वारा ही हमें ज्ञान की सामग्री प्राप्त होती है। जब हमारा मन इन प्रत्ययों को संयुक्त और वियुक्त करती है। तब ज्ञान की उत्पत्ति होती है। हमारा ज्ञान प्रत्ययों से बनता है।

लॉक के अनुसार प्रत्यय दो प्रकार के हैं -

(1) सरल प्रत्यय (Simple Ideas)

(2) जटिल प्रत्यय (Complex Ideas)

Scanned with CamScanner

(1) <u>सरल प्रत्यय (Simple Ideas)</u> — वे प्रत्यय जो संवेदना तथा स्वसंवेदना के द्वारा प्रत्यक्षतः प्राप्त होता है, उन्हें सरल प्रत्यय कहा जाता है। ये सरल प्रत्यय इसलिए कहे जाते हैं, क्योंकि ये बाह्य या आंतरिक विषय के साथ जन्म होते हैं तथा किसी प्रकार का मिश्रण नहीं रहता। सरल प्रत्ययों को ग्रहण करने में बुद्धि की सक्रियता नहीं होती अर्थात् इन प्रत्ययों को ग्रहण करते समय हमारी बुद्धि निष्क्रिय रहती है। लॉक ने सरल प्रत्यय की दो विशेषता बतलाई है।

(a) निरवयव (b) अविश्लेष्य

लॉक ने कहा कि अणुओं के भी यही लक्षण होते हैं। लॉक के लिए भी सरल प्रत्यय अणु रूप में ही हैं। उसे मन के लिए भी सरल प्रत्यय अणु रूप में ही है। उसे मन ना तो उत्पन्न कर सकता है और न ही नष्ट। मन मात्र उसे ग्रहण करता है। लॉक का यही विचार आगे चलकर अनुभववाद में इन्द्रिय-प्रदत्त (Sense-Datum) के रूप में जाना जाता है।

सरल प्रत्ययों को ग्रहण करते समय हमारी बुद्धि निष्क्रिय रहती है। जैसे ही जटिल प्रत्ययों की उत्पत्ति होती है हमारा मन सक्रिय हो जाता है। इन सरल प्रत्ययों को हम साक्षात रूप में जानते हैं। जैसे — लाल, पीला, गरम-ठंडा, सुगंध दुर्गंध इन्हें हम प्रत्यय रूप से जानते हैं। लेकिन ये सरल प्रत्यय हमें एक साथ नहीं मिलते, सटिक एक-एक करके हमें प्राप्त होते हैं।

ये सरल प्रत्यय चार प्रकार के हैं—

(i) एकेन्द्रिय प्रत्यय — वे सरल प्रत्यय जो केवल एक ही इन्द्रिय के माध्यम से मन में प्रवेश करते हैं। जैसे - रूप, रस, गंध शब्द, स्पर्श इत्यादि।

(ii) एक से अधिक इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाला प्रत्यय → कुछ ऐसे सरल प्रत्यय हैं जो एक से अधिक इन्द्रियों से प्राप्त होते हैं। जैसे - देश या विस्तार, स्थिरता, गति इत्यादि।

Scanned with CamScanner

(iii) चिन्तन के माध्यम से प्राप्त होने वाले प्रत्यय –

तीसरे प्रकार के सरल प्रत्यय में वैसे प्रत्यय आते हैं जो हमें आन्तः करण के स्वसंवेदन से प्राप्त होते हैं, जैसे – चिन्तन, मनन, संकल्प, संदेह, स्मृति आदि।

(iv) संवेदन तथा मन के अध्ययन से प्राप्त होनेवाले प्रत्यय – कुछ ऐसे भी सरल प्रत्यय होते हैं जो संवेदना तथा स्वसंवेदना के द्वारा प्राप्त होता है। जैसे – सुख, दुःख, सत्ता, गति, एकता आदि।

Scanned with CamScanner